खुद स्कूल न जाकर भी मां हमें पढ़ाती रही
(मातृ दिवस दस मई पर)

डॉ. श्रीगोपालनारसन
रूड़की

सचमुच मां के कदमों में जन्नत होती है। यह बात मुझे उस समय पता चली जब मेरी मां नहीं रही। मां के हमेशा के लिए चले जाने के बाद मेरे जीवन में जो उदासी व अवसाद आया और लगा जैसे मां के चले जाने के बाद मेरी दुनिया ही सूनी हो गई हो। ऐसा इसीलिए हुआ क्योंकि मां के बाद उसके कदमों की जन्नत ने भी मेरा साथ छोड़ दिया था। मुझे अब न मां की गोद में सिर रखकर मां के ममत्व की अनुभूति हो पा रही थी और न ही मां के ममत्व भरे हाथ मेरे सिर को सहलाने के लिए अब बचे थे। हमेशा के लिए अलविदा हो चुकी मां की देह से तो मैं हमेशा के लिए वंचित हो गया था परन्तु मां का अक्स आज भी मेरी आंखों में बसा है। उठते–बैठते चलते–फिरते हर जगह मुझे मां ही नजर आती है जैसे वह मुझे जीवन की राह पर उगंली पकड़कर ले जाना चाहती हो। इसीलिए मैं भी मां के अक्स और उनकी यादों के साथ उसी मार्ग पर चल पड़ा हूं जिस मार्ग पर ले चलने का मां ने स्वप्न बुना था। यानि मां के आदर्शो पर चलने की प्रेरणा ही मेरी सफलता का कारण बनी।

पिताजी मदन लाल शर्मा मेरी मां प्रकाशवती से तीन साल पहले ही चल बसे थे। 13 फरवरी सन् 2009 को 82 वर्ष की आयु में पिताजी श्री मदन लाल शर्मा दिवंगत हुए तो 82 वर्ष की आयु और 13 फरवरी को ही सन् 2012 में मां प्रकाशवती ने महाप्रयाण किया। हालांकि पिताजी एक मोमदिल इंसान थे और उनमें मां जैसा ममत्व था। तभी तो मां जब पढ़ने के लिए कहती या फिर पढ़ाई न करने को लेकर डांटती तो पिताजी मां के सामने हमारे लिए ढाल बनकर खड़े हो जाते और प्यार से कहते कोई बात नहीं धीरे–धीरे पढ़ लेंगे। कई बार तो मां जब घर पर नहीं होती और हम भाई–बहन रात में मां के निर्देश पर देर रात तक पढ़ रहे होते तो पिताजी हमें कहते बस बहुत पढ़ाई कर ली अब सो जाओ।

लेकिन मां जो अपने जीवन में कभी स्कूल नहीं गई, हमारी पढ़ाई को लेकर इतनी सजग थी कि बड़े भाई श्याम मोहन शर्मा का पालिटेक्निक में एडमिशन कराने के लिए अपने जेवर तक बेच दिये। वही सब बच्चे पढ़े और अच्छे नम्बरों से पास हो, इसके लिए मां हर रोज देर रात तक हमें पढ़ने के लिए न सिर्फ कहती बल्कि स्वयं भी रात भर हमारे पास बैठी रहती और देखती रहती कि हम पढ़ रहे हैं या नहीं। उस जमाने में टेलीविजन नये नये आए थे। हमारे गांव नारसन कलां में सिर्फ एक या दो टेलीविजन ही थे। टेलीविजन पर हर रविवार को फीचर फिल्म आती थी और हर बुधवार को चित्रहार टेलीविजन का प्रमुख आकर्षण होता था। हमारी भी इच्छा होती कि हम फिल्म और चित्रहार देखें परन्तु मां पढ़ाई के कारण इसकी अनुमति नहीं देती थी। कई बार हमे बुरा भी लगता परन्तु जब हमारा रिजल्ट आता और हम पास होते तो गांव के लोग बोलते कि पास हम नहीं, हमारी मां हुई है। गांव के लोगों की यह बात सोलह आने सच थी क्योंकि मां के अपने बच्चों की पढ़ाई के प्रति इसी जुनून के कारण मेरे बड़े भाई श्याम मोहन शर्मा इंजीनियर बन पाए, मैं एडवोकेट और मेरा छोटा भाई सुभाष शर्मा एम. कॉम करके बिजनेस में कामयाब हो पाया।

मां ने गरीबी के दिनों में भी कभी हौंसला नहीं खोया और पिताजी का साथ निभाने के लिए सन 1965 में अनपढ़ होते हुए भी सिलाई व कढ़ाई में डिप्लोमा किया और फिर घर में सिलाई कढ़ाई करके घर चलाने में पिताजी की आर्थिक मदद की। मां चूंकि सन 1942 के जनआन्दोलन में तिरंगा फैहराते हुए शहीद हुए 17 वर्षीय जगदीश प्रसाद वत्स की छोटी बहन थी और जब भाई शहीद हुए उस समय मां की उम्र केवल 14 वर्ष की थी। अगले ही वर्ष बेटे के गम में मां बाप के

गुजर जाने से मां के जिम्मे मात्र 15 वर्ष की आयु में मायके में अपने परिवार की जिम्मेदारी आ गई थी। उन कठिन दिनों में जिम्मेदारी के एहसास और अनुभव से ही मां को वह ताकत मिली थी कि वे जीवन के हर मोड़ पर सफल रही।

एक बात और जब घर की बिजली खराब हो जाती या फिर कोई खतरे का काम होता तो मेरे पिताजी उस काम को हमें करने से मना कर देते और पड़ोस के बच्चों को बुलाकर जब वह काम करने के लिए कहते तो उन्हें ऐसा करने से मां ही रोकती थी। मां का कहना था कि बच्चे चाहे हमारे हों या पड़ोस के सब एक समान हैं और जब हम अपने बच्चों को खतरे में नहीं डाल सकते तो फिर पड़ोस के बच्चों को खतरे में कैसे डाल सकते हैं? जिससे स्पष्ट है कि मां अपने या पराये किसी भी बच्चे में कोई भेदभाव नहीं करती थी। न्याय प्रिय मां ने कभी हमारी गलती को नहीं छिपाया और कभी दूसरों पर झूठा दोषारोपण नहीं किया। साथ ही अपनी कोई गलती होती तो सहजता से उसे स्वीकार कर लेना ही मां का स्वभाव था।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में जब मां को भारी पक्षाघात हुआ और मां ने शारारीक कष्ट झेलते हुए भी कभी अपना दुख प्रकट नहीं किया बल्कि जब भी मां से उनकी तकलीफ जानने की कोशिश करते तो मां के मुंह से एक ही शब्द निकलता कि वह ठीक है। दरअसल मां नहीं चाहती थी कि उनके दुख को देखकर कोई दुखी हो। हमेशा संयमी, शांत और सन्तुष्ट रहने वाली मां के अन्दर राष्ट्रभक्ति का भाव कूट कूटकर भरा था। उन्हें अपने भाई के राष्ट्रबलिदान के लिए एक पत्र समूह द्वारा सम्मानित भी किया गया था। मां चाहती थी कि उनके अमर शहीद भाई जगदीश प्रसाद वत्स की जीवनी शिक्षा के किसी पाठ्यक्रम में शामिल हो ताकि आने वाली पीढ़ी देश के शहीदों से प्रेरित होकर राष्ट्रभक्ति के मार्ग को अपना सके।

राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, उसमें दो राय नहीं।

(जवाहर लाल नेहरू)